सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

<u>प्रेस विज्ञप्ति – 18th Jan 2017</u>

वैकल्पिक नहीं सहयोगी बने पारंपरिक चिकित्सा, व्याधि से समाधि के समन्वय पर चिंतन

समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में देशभर से जुटे पारंपरिक चिकित्सा दिग्गज

चक्र का चक्का जाम कैसे खोले, रंग से लेकर तरंग, स्पर्श से लेकर गंध, व्याधि से समाधि और इलाज से रियाज तक तमाम मुद्दों पर सांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में विचार हो रहा है। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ आरएस शर्मा ने कहा कि वक्त आ गया है जब **पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों** को शामिल कर विभिन्न पैथियों की **कमियों को दूर** किया जाए। उन्होने पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर आधारित पाठ्यक्रम और शोध पर भी ज़ोर दिया। उन्होने कहा कि एलोपैथी के डॉक्टरों को पारंपरिक विधियों के विशेषज्ञों की सेवाएं लेना चाहिए जिससे उनके इलाज का असर बढ़ जाए। प्रो शर्मा ने समन्वित चिकित्सा केंद्र की पहल को मेडिकल यूनिवर्सिटी से पूरा सहयोग का भी वादा किया।
सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यजेश्वर शास्त्री ने कहा कि महात्मा बुद्ध को भवलोक वैद्य कहा जाता है जिन्होने दुख को खत्म करने का तरीका बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि हमारे शास्त्रों में पशुपक्षी पुराण, गजपुराण, वनस्पति पुराण जैसे ग्रंथ है जो पशुपक्षियों की बीमारियों और उनके निदान, वनस्पतियों के चिकित्सकीय उपयोग पर विस्तार से बताते है। सांची विवि के कुलसचिव श्री राजेश गुप्ता ने **द्वंद से आनंद** तक पहुंचने में सभी पैथियों और पद्धतियों के समन्वय की जरुरत बताई। उन्होने कहा कि हमें ये देखने की ज़रुरत है कि बीमारी जिस तल पर शुरु हुई उसे उसी तल पर खत्म करने का तरीका विकसित किया जाए।

बुधवार को पहले सत्र में **क्वांटम एनर्जी हीलिंग** की सुश्री रीता महाजन ने कहा कि हमारे डीएनए में एनर्जी के जरिए बीमारी को बहुत शुरुआती स्तर पर ही खत्म किया जा सकता है। क्वांटम एनर्जी हीलिंग में खराब स्मृतियों को हटाकर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाया जाता है। **वर्मा थैरेपी** पर डॉ टी थिरुनारायणन ने बात करते हुए कहा कि सिद्धा पद्धति में प्रकृति के साथ समन्वय और खानपान के जरिए स्वास्थ्य सुधार पर काम करती है। यूनानी चिकित्सा की विशेषज्ञ डॉ एस नफीस बानो ने कपिंग थैरेपी को समझाते हुए कहा कि यह 5 हजार साल पुरानी विधि और शरीर से नकारात्मक ऊर्जा को निकालने के सिद्धांत पर काम करती है। **कपिंग थैरेपी में शरीर के विभिन्न हिस्सों में वैक्यूम कप लगाए जाते है और वे नकारात्मक ऊर्जा को खींचकर उस स्थान पर रक्त प्रवाह बढ़ा देते है**। साइको न्यूरोबिक्स के बीके चंद्रशेखर ने कैंसर से ठीक होने और ऊर्जा स्तर के संतुलन पर बात की। जुबिन विवानिया ने **ग्रेफोलॉजी** यानि हस्तलिपि के आधार पर बीमारियों का पता लगाने , स्वास्थ्य में सुधार और बेहतर ऊर्जा पर बात की। डॉ. राहुल मलुस्थे और डॉ तमन्ना चेलानी ने पास्ट लाइफ रिग्रेशन के जरिए बीमारी की पुरानी जड़ो और समन्वित जीवन पर बात की।

समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में 19 जनवरी को **क्रिएटिव विजुलाइजेशन** की महारथी डॉ सारा चिंतनवाला, नालंदा विवि के पूर्व कुलपति और **विपस्सयना ध्यान** के प्रो. रविंद्र पंथ, **वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस** के वेदरवि शेंगर, **ट्रांस मेडिटेशन** के डॉ आशीष गांगुली, **मंत्र थैरेपी** की डॉ मंजू जैन समेत कई विद्वान अपनी बात रखेंगे जो पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए देशभर में मशहूर हैं।

कार्यशाला में 30 **पारंपरिक चिकित्सा और ऊर्जा आधारित चिकित्सा प्रणालियों में बीमारी की उत्पत्ति, उसे जानने के तरीकों और निवारण के दर्शन पर गहन चर्चा** के साथ उनके समन्वय पर बात हो रही है। कार्यशाला का उद्देश्य सरल, सुगम, सटीक, सुलभ और संपूर्ण निरोग है जिसकी प्राप्ति के लिए सांची विवि का समन्वित चिकित्सा केंद्र कार्यरत है।

- समन्वित चिकित्सा पर कार्यशाला का शुभारंभ

- 30 पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के मशहूर विद्वान शामिल
- पारंपरिक प्रणालियों में बीमारी की पहचान और निवारण के तरीकों पर चर्चा
- पारंपरिक प्रणालियों और पैथियों में समन्वय के बिदुंओं पर विचार
- क्वांटम एनर्जी, कपिंग थैरेपी, ग्रेफोलॉजी, पास्ट लाइफ रिग्रेशन, साइको न्यूरोबिक्स पर हुई बात
- विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय पर कार्य कर रहा है समन्वित चिकित्सा केंद्र

आपसे अनुरोध है कि उपरोक्त समाचार को अपने प्रतिष्ठित लोकप्रिय समाचार पत्र में प्रकाशित करने का कष्ट करेंगे।